शिक्षा प्राप्ति में रूकावट

मधु कुल्हार

1. विषय प्रवेश

माता शत्रुः पिता वैरी येन बालो न पाठितः।

न शोभते सभामध्ये हंसमध्ये बको यथा।।

ऐसे माता–पिता अपनी संतान के शत्रु होते हैं जो बालक को शिक्षित नहीं करते। अशिक्षित व्यक्ति सभा में शोभा नहीं देता और वह हंसों में बगुले समान होता है।

आधुनिक परिप्रेक्ष्य में आजीविका उपार्जन के लिए शिक्षा का अधिक महत्व है। जातक से अधिक उसके माता–पिता चिंतित रहते हैं और ज्योतिषियों से पूछते हैं कि बच्चे की शिक्षा कैसी रहेगी और शिक्षा प्राप्ति में कोई रुकावट तो नहीं है? 'शिक्षा प्राप्ति में कोई रुकावट' का ज्योतिषीय दृष्टिकोण से आकलन ही लेख का विषय है।

2. शिक्षा सम्बंधित कारक भाव

• **II–भाव / भावेश** : अनौपचारिक शिक्षा जिसमें बच्चा निरीक्षण एवं अनुपालन से सीखता है।

• **IV–भाव/भावेश** : अक्षर ज्ञान से विषय चयन तक की शिक्षा का आकलन इस भाव से करना चाहिए।

• **V–भाव/भावेश** : ऐसी शिक्षा, जिसमें ज्ञान तथा बुद्धिमत्ता आवश्यक हो, अर्थात् जो आजीविका से सम्बन्धित हो।

इस लेख में अष्टम भाव, जो रिसर्च सम्बन्धित हैं, और नवम भाव, जो उच्च शिक्षा सम्बन्धित है, का आकलन नहीं किया जा रहा है, क्योंकि आलेख का विषय शिक्षा में रूकावट है।

3.शिक्षा सम्बंधित कारक ग्रह एवं दशा

• गुरु : बुद्धिमत्ता और शास्त्र–ज्ञान का कारक है।

• बुध : स्मरण शक्ति व बौद्धिक क्षमता का कारक है।

• चन्द्र : इच्छा–शक्ति और एकाग्रता का कारक है।

• नवांश : ग्रहों/भावेशों के बल के आकलन और स्वतंत्र कुंडली की तरह।

चतुर्विंशांश का आकलन भी नहीं किया जा रहा है क्योंकि इसका आकलन कॉलेज की शिक्षा स्तर के अनुमान के अधिक उपयोगी है।

4. शिक्षा सम्बंधित अनुकूल दशा

हमने अनेकानेक बार सुना होगा कि, मेरा बेटा पहले तो अध्ययन में अच्छा था पर आठवीं के बाद से कमजोर हो गया। लग्नेश, चतुर्थेश, पंचमेश और दशमेश आदि बली ग्रहों की दशा शिक्षा के लिए अनुकूल होती है।

5. शिक्षा रूकावट सम्बंधित आकलन के मुख्य सूत्र

5.1 साहित्यिक सन्दर्भ

• जातक तत्त्वम, पंचम विवेक : यदि लग्नस्थ चन्द्र शनि और मंगल से दृष्ट हो, पंचमेश क्रूर षष्ठ्यांश में स्थित हो, या चन्द्र पर शनि की, मंगल की और सूर्य की दृष्टि हो, तो मनुष्य बुद्धिहीन होता है।

• जातक पारिजात, तृतीय चतुर्थ भाव फलाध्याय : यदि चतुर्थेश पाप दृष्ट हो, पापयुक्त हो और 6ठे, 8वें या 12वें भाव में हो या नीचास्तंगत हो तो मनुष्य विद्याहीन होता है।

• जातक पारिजात, तृतीय चतुर्थ भाव फलाध्याय : चतुर्थेश, गुरु व बुध की स्थिति 3रे, 6ठे, 8वें या 12वें भाव में हो और नीचास्तंगत शत्रु राशिस्थ हो, तो जातक विद्या, बुद्धि और विवेक में हीन होता है।

5.2 प्रचलित सूत्र

• शिक्षा सम्बंधित भाव, भावेश और कारक ग्रह जब त्रिक भावस्थ हों, अस्त हों, नीच या शत्रु क्षेत्री हों, तो शिक्षा में बाधा उत्पन्न होती है।

• शिक्षा सम्बंधित भाव, भावेश और कारक ग्रहों पर जब अशुभ ग्रहों का प्रभाव हो या दुःस्थान के स्वामी से युति हो, तो शिक्षा में बाधा उत्पन्न होती है।

• शिक्षा के समय उचित महादशा का न मिलना या दशा छिद्र आदि का आना या गोचरवश साढ़े–साती आदि का आना।

• चन्द्र के पीड़ित होकर शिक्षा भाव/भावेशों से सम्बन्ध होना।

• लग्न–लग्नेश के पीड़ित होने पर

जातक के आत्मबल में कमी आती है और उक्त अन्य प्रभाव होने से जल्द ही शिक्षा छोड़ सकता है।

6. उदाहरण

उदाहरण 1 : जन्म विवरण : पुरूष, 15–12–1988, 11:10 बजे, जयपुर, राजस्थान।

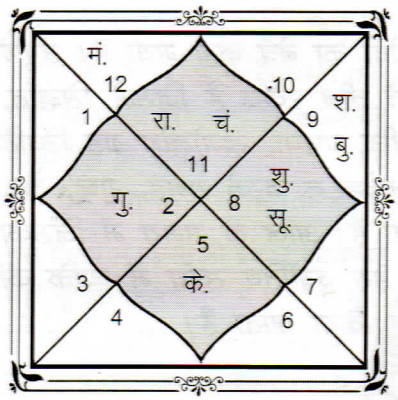

2008 में जातक की दशा छिद्र गु/रा सक्रिय थी जिससे शिक्षा में व्यवधान आया। राहु–चन्द्र की युति पर शनि की दृष्टि से भी बुद्धि भ्रमता से साथ–साथ इच्छा–शक्ति और एकाग्रता में कमी आई। जातक मैकेनिकल इंजीनियरिंग में फेल हो गया। श./श. में जातक पुनः फेल हो गया क्योंकि बुध शनि से पीड़ित है और साथ ही पंचम/अष्टम से सम्बन्धित है।

उदाहरण 2 : 29–06–1981, 06–35 बजे, ग्वालियर, मध्य प्रदेश।

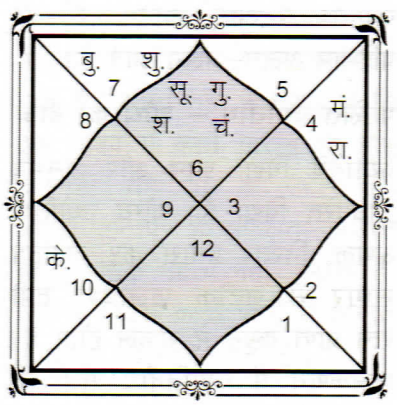

जातक को शिक्षा अवधि में राहु की दशा मिली जो अशुभ भावस्थ, शत्रु राशिस्थ और नीच अष्टमेश/तृतीयेश मंगल से युत है। चतुर्थेश भी शत्रु राशिस्थ होकर पीड़ित है। चतुर्थेश के निर्बल और अष्टमेश से युति होने से जातक ने 8वीं में पढ़ाई छोड़ दी और आर्थिक तंगी के चलते अपने पिता के व्यवसाय में सहयोग देने लगा।

उदाहरण 3 : 21–01–1981, 4–45 बजे, ग्वालियर, मध्य प्रदेश।

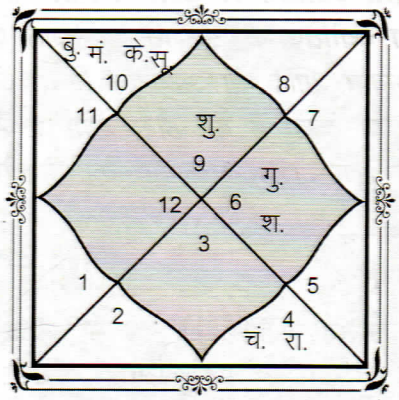

जातक को 2 वर्ष की उम्र से पीड़ित बुध की महादशा मिली। जातक की शिक्षा ब्रेक लग–लग कर किसी प्रकार 10वीं कक्षा तक पूर्ण हुई। चन्द्र भी पीड़ित है। बुद्ध–चन्द्र के आते ही जातक की शिक्षा आर्थिक तंगी के कारण पूर्णतः बंद हो गयी थी।

उदाहरण 4 : महिला, 28–05–1985, 17:40 बजे, कलकत्ता, पश्चिम बंगाल।

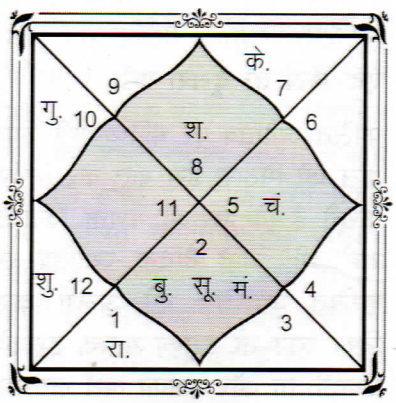

इस जातिका की पढाई में कोई रूचि नहीं और तीसरी कक्षा के बाद से ही स्कूल नहीं गयी। द्वितीयेश/पंचमेश गुरु नीच राशिस्थ और शनि से दृष्ट। चतुर्थेश शनि शत्रु राशिस्थ और सूर्य एवं मंगल से पीड़ित। चन्द्र, मंगल एवं शनि से पीड़ित और नवांश में नीच राशिस्थ, जिस कारणवश जातिका का मन पढ़ाई में बिल्कुल भी नहीं लगा।

5. उपाय

शिक्षा में रूकावट हो, तो निम्न उपायों से लाभ मिलता है :

- सूर्य देव को प्रत्येक रविवार अर्घ्य दें व सूर्य मंत्र का जाप करें।
- गणेश जी की उपासना बुधवार को संकट मोचक गणेश स्तोत्र से करें और हर बुधवार दूर्वा अर्पित करें।
- देवी सरस्वती का पूजन व मंत्र जाप करें।
- गुरूवार को व्रत, पूजन, मंत्र–जाप करें।
- शिव जी की पूजा उपासना करें।

6. निष्कर्ष

शिक्षा की रूकावट का आकलन जन्मकुंडली से किया जा सकता है। आजकल माता–पिता बच्चों की शिक्षा के लिए बहुत चिंतित रहते हैं जिससे बच्चों को तनावपूर्ण वातावरण मिलता है और ज्योतिषी के पूर्व–संकेतों और मार्गदर्शन से अपेक्षाएँ संतुलित होती हैं और सही मार्ग खोजने में सुगमता होती है। ❐

पता : 8 ए. डब्लू. एच., ओ., कॉलोनी
अंबा बारी, जयपुर (राजस्थान)
पिन कोड– 302039
मो. 9313344227